शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.64

सामाजिक उत्थान में लोकगीत की भूमिका

प्राप्तिः 05.09.2025
स्वीकृतः 12.09.2025

64

अर्जुन गहलौत
शोधार्थी (संगीत विभाग)
आगरा कॉलेज, आगरा
डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
ईमेलः *arjungahlaut13@gmail.com*

प्रो0 (डॉ.) आन्शवना सक्सेना
पर्यवेक्षक (संगीत विभाग)
आगरा कॉलेज, आगरा
ईमेलः *aanshwana@gmail.com*

सारांश

लोकगीत प्रायः समूह में गाये जाते है और एक साथ समूह में रहने से एक दूसरे के आचार– विचार, रहन–सहन, भाषा, बोली आदि का आदान प्रदान होता है जिससे एक दूसरे के प्रति आदर सम्मान और प्रेम की भावना उत्पन्न होती है। इस प्रकार की भावना सामाजिक एकता को जन्म देती है। लोकगीत समाज में एक संदेश वाहक का भी कार्य करते हैं। लोकगीतों की कर्ण प्रिय धुन, सरल भाषा लोगों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। लोकगीत जनमानस में प्रेम, उत्साह, करुणा आदि की संचार करने में सक्षम होते हैं। कजरी, चैता, निर्गुण, विवाह, सोहर आदि लोकगीत समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं।

मुख्य बिंदु

समाज, लोकगीत, दहेज, बाल विवाह, संस्कृति।

लोकगीत – लोकगीत जीवन के हर्षोल्लास सुख दुख आदि की सरल अभिव्यक्ति होती है। डॉ चिंता मणि उपाध्याय के अनुसार– 'सामान्य लोकजीवन की पार्श्व भूमि में अचिन्त्य रूप में अन्यास ही फूट पड़ने वाली मानोभावों की लयात्मक अभिव्यक्ति लोकगीत कहलाती है।'[1] इन गीतों में सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति और चेतना के दर्शन होते हैं। समाज की जैसी स्थिति होती है लोकगीत में वही व्यक्त होती है। लोकगीत एक ओर जहाँ समाज की अच्छाइयों को सुरों में पिरो कर लोगों को प्रोत्साहित करते हैं वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त बुराइयों पर स्वरों का प्रहार कर लोगों को जागरूक करने का भी कार्य करते हैं। भारतीय समाज, बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा, भ्रूण हत्या, इत्यादि सामाजिक समस्या का सामना करता रहा है, इन समस्याओं से लड़ने में लोकगीत महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सामाजिक एकता में लोकगीत का योगदान – भारत गांवों का देश है, और गाँव में रहने वाली जनता अपने काम – काज, व्रत, पर्व–त्योहार आदि अवसरों पर लोकगीतों को गा–बजा कर अपने सुख दुख की अभिव्यक्ति करती है जैसे कृषि कार्य करते समय सोहनी, कटिया, रोपनी इत्यादि गीत गाये जाते हैं, इस प्रकार के सामूहिक गीतों से एकता की भावना प्रखर होती है। पारिवारिक जीवन में हर्षोल्लास व्यक्त करने के लिए कजरी और चैती जैसे प्रेम विषयक लोकगीत वर्षों से गाये जा रहे हैं जिसमे श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है। ऐसे गीत पारिवारिक और सामाजिक जीवन में नवीन ऊर्जा प्रदान करते हैं।

कजरी लोकगीत –

'रुन झुन खोल ना केवड़िया, हम बिदेसवा जइबो ना
जो मोरे सइयाँ तुहु जइब बिदेशवा, सइयाँ जइब बिदेसवा
हमरे भइया के बुलाद हम नइहरवा जइबो ना'

इस लोकगीत में पति अपने पत्नी का नाम लेकर कहता है की रुनझुन दरवाजा खोलो मैं विदेश जाऊँगा, पत्नी कहती है आप विदेश जा रहे हैं तो मेरे भाई को बुला दीजिए मैं भी नैहर जाऊँगी।

चैती लोक गीत–

सुतल सइयाँ के जगावे हो रामा, कोयल तोरी बोलिया
रोज रोज बोले कोइलर साझ हो बिहनवा,
आज काहे बोले भिनुसारे हो रामा, कोयल तोरी बोलिया।

इस लोकगीत में एक स्त्री कोयल पक्षी से कहती है कि कोयल तुम्हारी आवाज मेरे सोते हुए पति को जगा रही है।

प्रतिदिन तुम सुबह और शाम को बोलती हो आज क्यो आधी रात को बोल रही हो। यह लोक गीत पति के प्रति पत्नी के प्रेम को दर्शाता है।

भारतीय संस्कृति के संवर्धन में लोकगीत का योगदान – भारतीय संस्कृति में 16 संस्कार हैं। इन संस्कारों पर लोकगीत के माध्यम से करुण रस, श्रृंगार रस हास्य रस, वात्सल्य रस और शान्त रस की रचना होती है।[2] जिससे लोग अपने जीवन के सुख–दुख को सहज भाव से व्यक्त करते हैं।

पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी, पद्म भूषण एवं पद्म विभूषण(मारणोपरांत) से सम्मानित लोकगीत की प्रसिद्ध गायिका शारदा सिन्हा जी जिनकी मृत्यु 05 नवंबर 2024 को हुई है लोकगीत में इनका योगदान अग्रणी रहा है। इनके द्वारा गाये लोकगीत समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। शारदा सिन्हा जी ने पारंपरिक लोकगीतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुचाने का कार्य किया है। इनके द्वारा गाये गए संस्कार संबंधित लोकगीत भारतीय समाज को अपने संस्कृति से जोड़े रखने का कार्य करते हैं। भारतीय 16 संस्कारों में विवाह संस्कार एक प्रमुख संस्कार है जिसमे चूमावन गीत, मड़वा गीत, गारी गीत गाने की परम्परा हैं। शारदा सिन्हा जी के स्वरों में निम्नवत् गारी गीत बहुत मनमोहक लगता है –

''राम जी से पूछे जनकपुर के नारी
बता द बबुआ लोगवा देत काहे गारी

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.64

बता द बबुआ''
तोहरा से पूछूँ मैं ओ धनुषधारी
एक भाई गोर काहे, एक भाई कारी
बता द बबुआ लोगवा देत काहे गारी"

दहेज कुप्रथा के दुष्परिणाम को उजगाए करने में लोकगीत का योगदान– दहेज कुप्रथा का आरम्भ भले ही एक मंगलकारी प्रथा के रूप में हुआ हो लेकिन वर्तमान समय में इसकी भूमिका नकारात्मक दृष्टव्य होती है। यह प्रथा भारतीय समाज में स्त्री के लिए एक अभिशाप के रूप में है। हमारे देश में दहेज उत्पीड़न को रोकने के लिए कानूनी प्रावधान है लेकिन लोकगीतों के माध्यम से भी इस कुप्रथा पर कड़ा प्रहार किया जा सकता है। अनेक लोक कलाकारों ने गीत–संगीत, नाट्य इत्यादि के माध्यम से समाज के इस नकारात्मक विचार को समाप्त करने के लिए कई प्रयास किए जिसमे 16 मार्च 1886 को छपरा जिले के मिसिरवालिया गांव में जन्मे महेंदर मिसिर जी और 18 दिसंबर 1887 को बिहार प्रांत के सारण जिले के कुतुबपुर गांव में जन्मे भिकारी ठाकुर जी ने अपना सर्वोत्तम योगदान दिया। भिकारी ठाकुर जी के रचनाओं में विदेशिया, गबरघिचोर, विधवा विलाप, बेटी बेचवा प्रमुख हैं। 'बेटी बेचवा' नाटक का अत्यंत मार्मिक गीत –

'गिरजा कुमार कर दुखवा हमार पार
ढर ढर ढरकत बा लोर मोर हो बाबूजी।
पढ़ल गुनल भूलि गइल समदल भेड़ा भइल
सउदा बेसाहे में ठगइल हो बाबूजी ।
केइ अइसन जादू कइल पागल तोहर मति भइल
नेटी काटि के बेटी भसीअवल ऽ हो बाबूजी ।
रोपया गिनाई लेहल, पगहा धराई दिहल
चेरिया के छेरिया, बनवल हो बाबूजी''

यह एक बेटी विलाप लोकगीत है, जिसके माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, माता पिता की लाचारी, बेमेल विवाह आदि के दुष्प्रभाव को बड़ी गंभीरता से प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार के गीत लोगों को सामाजिक सुधार के लिए प्रेरित करते हैं।

दहेज प्रथा का एक गीत जिसमे एक बेटी के दर्द को व्यक्त किया गया है –

''कवन गरहनवा बाबा साँझहि लागेला;
कवन गरहनवा भिनुसार ए।
कवन गरहनवा बाबा मड़वनी लागेला;
कब दोनी उगरह होई ए।।१।।
चान गरहनवा बेटी साँझ ही लागेला;
सुरुज गरहनवा भिनुसार ए।
धियवा गरहनवा बेटी मड़वनी लागेला;

कब दोनी उगरह होई ए।।२।।''[3]

वर्तमान समय में अनेक नवीन कलाकारों ने भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल विवाह, इत्यादि कुप्रथा पर गीत गा कर सामाजिक सुधार हेतु आह्वान किया है। जिसमें भरत शर्मा व्यास, गोपाल राय, मालनी अवस्थी, कल्पना पटवारी, मनोज तिवारी, चंदन तिवारी, संजोली पांडे, मैथिली ठाकुर इत्यादि गायक–गायिकाओं का योगदान अत्यंत सराहनीय है।

बाल विवाह के दुष्परिणाम को उजगाए करने में लोकगीत का योगदान– पद्म श्री, कालिदास ,यश भारती, सहारा अवध, नारी गौरव इत्यादि पुरस्कारों से सम्मानित मालिनी अवस्थी जी ने माटी से जुड़े गीतों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत कर लोकगीतों की पहचान बढ़ाई हैं।[4] मालिनी जी का गाया गीत जिसमे बाल विवाह से उत्पन्न एक स्त्री के दुख को व्यक्त किया गया है–

''सइयाँ मिले लड़कइयाँ मैं क्या करूँ
बारह बरस की मैं ब्याह के आई
सइयाँ उड़ावे कनकइयाँ मैं क्या करूँ
पन्दर बरस की मैं गवने पे आई
सइयाँ छोड़ावे मोसे बइयाँ मैं क्या करूँ''

इस गीत के माध्यम से यह बताया गया है कि एक लड़की की 12 वर्ष की छोटी उम्र में शादी कर दी जाती है जिसके कारण लड़की को अनेक बौद्धिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह का एक अन्य लोकगीत जिसमे एक स्त्री के वेदना को व्यक्त किया है–

''सबका देल भोला अन धन सोनवा,
बनवारी हो, हमारा के लरिका भतार।।टेक।।
लारिका भतार लेके सूतली ओसरवा,
बनवारी हो रहरी में बोले ला सियार।।१।।टेक
सुते के सिरवा सुतेला गोनतारी,
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार।।२।।टेक''[5]

इस गीत में नवविवाहिता पत्नी भगवान शिव से कहती है कि आप सबको अन धन सोना दिए हैं और मुझे वनवारी जी बालक पति दिए हैं, मेरे पति इतने नादान है कि मेरी कोई बात नहीं समझ पाते हैं। इस गीत के माध्यम से बाल विवाह कुप्रथा को उजागर करके जनता को जागरूक करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

यद्यपि बाल विवाह, दहेज प्रथा, को रोकने के लिए सरकार द्वारा कई कानूनी प्रावधान किये गए हैं लेकिन इसके अतिरिक्त इन कुप्रथाओं को रोकने में लोकगीत लोक नाट्य आदि बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं इसलिए सरकार आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के माध्यम से इस प्रकार की लोकगीतों का प्रसारण करती रहती है। वर्तमान समय में भ्रूण हत्या, बाल विवाह जैसी सम्याओं में सुधार देखा गया है लेकिन इसे पूर्णतः समाप्त करने के लिए आम जानता को सरकार के द्वारा चलाई

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.64

गई योजनाओं में साथ देना होगा। दहेज उत्पीड़न की खबर समाचार पत्रों में आज भी देखने को मिलती हैं। अतः इसको रोकने के लिए जमीनी स्तर पर सुधार की आवश्यकता है जिसमे लोकगीत एक सशक्त माध्यम हो सकता है। अतः कुछ लोकगीतों को नुक्कड़ नाटकों के साथ जोड़कर लोगों को जागरूक करने के लिए कुछ नये प्रयासों की महती आवश्यकता है।

संदर्भ

1. डॉ चिंतामणि उपाध्याय, मालवी लोक गीत एकविवेचनातमक अध्यन, मंगल प्रकाशन जयपुरः 1964, पृ० सं०–9
2. भार्गव, डॉ० सत्य 'राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका', संजय प्रकाशन नई दिल्लीः 2002 पृ० सं०–150
3. उपाध्याय, डॉ० कृष्ण देव, हिंदी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबादः 1990 पृ० सं०–68
4. पद्मश्री मालिनी अवस्थी के नाम जुड़ा संगीत नाटक अकादमी अवार्ड Hindustanhttps://www.livehindustan.com › s...
5. उपाध्याय, डॉ० कृष्ण देव, हिंदी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबादः 1990 पृ० सं०–70